

## प्रेस नोट

भा.कृ.अनु.प.-भा.कृ.अनु.सं., नई दिल्ली के 64वें दीक्षांत समारोह के दौरान पीएच.डी. विद्यार्थियों की प्रस्तुतियाँ

दिनांक: 09.02.2026

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-आईएआरआई), नई दिल्ली के 64वें दीक्षांत सप्ताह (8-13 फरवरी 2026) के दूसरे दिन की शुरुआत स्नातकोत्तर विद्यार्थियों द्वारा उत्कृष्ट पीएच.डी. शोध कार्यों की प्रस्तुतियों के साथ हुई। ये विद्यार्थी मेरिट मेडल, नाबार्ड प्रोफेसर वी. एल. चोपड़ा स्वर्ण पदक तथा 'बेस्ट स्टूडेंट ऑफ द ईयर' पुरस्कार हेतु प्रतिस्पर्धा कर रहे थे। सत्र की अध्यक्षता डॉ. आर. सी. अग्रवाल, पूर्व उप महानिदेशक (कृषि शिक्षा), आईसीएआर, नई दिल्ली ने की। इस अवसर पर डॉ. च. श्रीनिवास राव, निदेशक, आईसीएआर-आईएआरआई तथा डॉ. अनुपमा सिंह, अधिष्ठाता एवं संयुक्त निदेशक (कृषि शिक्षा) उपस्थित रहीं। जूरी में डॉ. बलराज सिंह, पूर्व कुलपति, एसकेएनएयू जोबनेर; डॉ. कौशिक बनर्जी; प्रो. नीलम सांगवान, निदेशक (अनुसंधान एवं विकास प्रकोष्ठ) एवं अधिष्ठाता, केंद्रीय विश्वविद्यालय, हरियाणा; डॉ. आर. एम. सुन्दरम, निदेशक, आईसीएआर-आईआईआरआर, हैदराबाद; तथा डॉ. एच. एस. सिद्धू जैसे प्रख्यात वैज्ञानिक एवं शिक्षाविद् शामिल थे।

9 फरवरी 2026 को आयोजित 64वें दीक्षांत समारोह के दूसरे दिन पीएच.डी. शोध प्रस्तुतियों में स्थिरता, डिजिटल नवाचार तथा जलवायु-स्मार्ट कृषि रणनीतियों का सशक्त समन्वय परिलक्षित हुआ। कई अध्ययनों में पर्यावरण अनुकूल फसल सुरक्षा उपायों पर ध्यान केंद्रित किया गया, जिनमें मेंथा स्पिकाटा एवं कैनाबिस सैटिवा का फाइटोकेमिकल प्रोफाइलिंग एवं कीटनाशी मूल्यांकन, तथा लक्षित रोग प्रबंधन हेतु होस्ट-वेक्टर अंतःक्रिया विश्लेषण के माध्यम से लीफ कर्ल रोग का जोखिम आकलन शामिल था। जलवायु अनुकूलता एक प्रमुख विषय के रूप में उभरी, जिसके अंतर्गत तेलंगाना के लघुधारक किसानों के बीच जलवायु-स्मार्ट कृषि प्रौद्योगिकियों को अपनाने का मूल्यांकन तथा अनुकूलन क्षमता के सामाजिक-आर्थिक एवं संस्थागत निर्धारकों का विश्लेषण किया गया।

परिशुद्ध कृषि एवं स्वचालन को संरक्षित खेती प्रणालियों हेतु मशीन विज्ञान सक्षम, स्थान-विशिष्ट स्प्रेइंग रोबोट के विकास के माध्यम से प्रमुखता मिली, जिससे प्रभावी रोग नियंत्रण बनाए रखते हुए कीटनाशकों के उपयोग में उल्लेखनीय कमी प्रदर्शित हुई। डिजिटल प्रसार एवं परामर्श तंत्र का मूल्यांकन 'किसान सारथी' मंच पर किए गए अध्ययनों के माध्यम से किया गया, जिसमें इसे समयबद्ध, विश्वसनीय एवं क्रियान्वित योग्य कृषि जानकारी तक किसानों की पहुँच सुधारने वाले बहु-माध्यमीय, व्यक्तिगत डिजिटल इंटरफेस के रूप में रेखांकित किया गया। उन्नत विश्लेषणात्मक एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता-आधारित दृष्टिकोणों का व्यापक उपयोग किया गया, जिनमें फसल सिमुलेशन मॉडलों और एआई एल्गोरिद्म के एकीकरण द्वारा बहु-चरणीय गेहूँ उपज पूर्वानुमान, तथा बाजार बुद्धिमत्ता एवं भावना डेटा के आधार पर कृषि मूल्य पूर्वानुमान हेतु डीप लर्निंग आधारित पाठ विश्लेषण शामिल था।

पोषक तत्व प्रबंधन एवं मृदा-पादप अंतःक्रियाओं पर आधारित शोध ने कृषि विज्ञान एवं फसल पोषण के उभरते आरामों को संबोधित किया। अध्ययनों में सब्जी फसलों में नाइट्रोजन उपयोग दक्षता बढ़ाने हेतु नैनो-ज़ियोलाइट आधारित यूरिया अमोनियम नाइट्रेट संरचनाओं की प्रभावशीलता का मूल्यांकन तथा विभिन्न फॉस्फोरस प्रबंधन व्यवस्थाओं के अंतर्गत धान में फाइटेट संचयन के जैव-रासायनिक, आणविक एवं एपिजेनेटिक विनियमन का परीक्षण किया गया। समग्र रूप से, इन शोध प्रस्तुतियों ने समकालीन कृषि चुनौतियों के समाधान हेतु प्रणाली-आधारित दृष्टिकोण को रेखांकित किया, जिसमें स्मार्ट इनपुट, डिजिटल प्रौद्योगिकियाँ एवं नीतिगत

रूप से प्रासंगिक अंतर्दृष्टियाँ सम्मिलित थीं, ताकि उत्पादकता, स्थिरता एवं लचीलापन सुदृढ़ किया जा सके।

अपने समापन वक्तव्य में अध्यक्ष महोदय ने स्नातकोत्तर शोध की उच्च गुणवत्ता की सराहना की तथा विद्यार्थियों को कृषि विज्ञान की उन्नति हेतु ठोस वैज्ञानिक प्रमाण उत्पन्न करने के लिए कठोर एवं गहन विश्लेषणात्मक अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित किया। सत्र में प्रदर्शित शोध ने कृषि शिक्षा में उत्कृष्टता, नवाचार-आधारित अनुसंधान तथा सतत खाद्य प्रणालियों के लिए क्षमता निर्माण के प्रति आईसीएआर-आईएआरआई की प्रतिबद्धता की पुनः पुष्टि की। दीक्षांत समारोह ने उभरते शोधकर्ताओं को सम्मानित करने के लिए एक विशिष्ट मंच प्रदान किया, जिनका कार्य किसानों के कल्याण, पर्यावरणीय स्थिरता एवं राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान देने की अपेक्षा रखता है। सत्र का समापन अध्यक्ष, जूरी सदस्यों, गणमान्य अतिथियों, संकाय सदस्यों एवं उपस्थित सभी प्रतिभागियों के प्रति औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।